



JUL 2018

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17  
18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31  
S M T W T F S S M T W T F S S M T

नवम्बर माह से प्रारम्भ :-

Page No 78

त्रयोदशः पाठः

किशोरणी मनोविज्ञानम् Week 180-185

29

शब्दार्थ :- प्रकृतेः = प्रकृति का । कौमारं = किशोरवस्था ।

परा = खुदापा । निर्दिशति = बताते हैं, निर्देशादते हैं । अन्तराले = बीच में ।

अधीयानाः = पढ़ने वाले । किशोर्यः = किशोरियों । क्तावधानाः = सतर्क, सावधान ।

प्रवर्तते = बदलता है, (यहाँ) बढ़ता है । मार्दवम् = मृदुता, कोमलता ।

परुषताम् = कठोरता को । प्राप्नोति = प्राप्त करते हैं । समाविशन्ति =

प्रकट होने लगते हैं । विकारः = परिवर्तन । वा = या । साहिष्णुता =

सहनशीलता । स्वैर वृत्तिः = मनमाना व्यवहार । विकृतानि = दूषित ।

दिवास्वप्नस्य = असम्भव का । अवास्तविक का ।

आशावद्भिः = आशावादी, आशावान । पुराणम् = पुरा करना ।

स्वामिदेषस्य = अपनी ईच्छा का । साधनप्राप्तम् = क्षमता को ।

दूरतः दूरयमानम् = दूरगामी । अनुबन्धशास्त्रिभिः = दृढ़ता से

अनुशासन का पालन करने वालों द्वारा ही, दृढ़-निश्चय वालों

द्वारा । लभ्यते = पाया जाता है । कर्मयम् = अपेक्षित । कुठठा =

प्रयास करने पर भी इच्छित कार्य की सिद्धि न होने के

कारण आत्मशक्ति । अभिनवः = नया, नवीन ।

श्लोक :- देवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या

यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः ।

शब्दार्थ :- देवम् = भाग्य को । निहत्य = छोड़कर । पौरुषम् = पुरुषार्थ

परिश्रम । यत्ने कृते = प्रयास करने पर । आत्मशक्त्या = अपनी

सामर्थ्य भर करने पर भी, उपाय करने पर भी । सिद्ध्यति = पूर्ण

होता है, सिद्ध होता है । अत्र = यहाँ । कः = कौन (यहाँ-किसका)

अन्वय :- देवं निहत्य आत्मशक्त्या पौरुषम् कुरु । यत्ने कृते (अपि)

यदि (कार्यम्) न सिद्ध्यति (तर्हि) अत्र कः दोषः ।

(अर्थात् - कस्यऽपि दोषः न अस्ति)

अर्थ :- भाग्य को छोड़ अपनी सामर्थ्य भर पुरुषार्थ (परिश्रम) करो ।

प्रयास करने पर भी यदि कार्य नहीं सिद्ध होता है तो यहाँ

किसका दोष है? (अर्थात् किसी और का दोष नहीं है) ।

शब्दार्थ :- सत्वरम् = शीघ्र । सिद्धिः = सफलता । अवद्योयः =

करना-चाहिए । प्रारब्धम् = आरम्भ किया हुआ । कवेः = कवि

का । सुधियः = विद्वान, ज्ञानी, पण्डित । संकल्पस्य = निश्चय की ।

दृष्टेः प्यापकता = दूरदर्शिता । दृष्टि की व्यापकता । स्मरणीयम् =

याद रखने योग्य । चिन्तनीयम् = सोचना-चाहिए ।